अगर आप किसी वजह से पर्सनल लोन की रकम नहीं चुका पा रहे हैं तो परेशान न हों। कई ऐसे तरीके हैं जिनकी मदद से लोन के जाल से निकला जा सकता है। इन तरीकों के बारे में एक्सपर्ट्स से जानकारी लेकर बता रहे हैं राजेश भारती

लोन से ऐसे निपट लो...

एक्सपर्ट पैनल

तारेश भाटिया
सर्टिफाइड फाइनैंशल प्लानर प्रो

सुशील अग्रवाल
सीनियर चार्टर्ड अकाउंटेंट

आशीष सिंह
मैनेजर, बैंक ऑफ महाराष्ट्र

आदित्य परोलिया
ऐडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट

अशवनी राणा
फाउंडर, वॉयस ऑफ बैंकिंग

ये 5 बातें रखें ध्यान

इनकम बढ़ाएं
ऑनलाइन या ऑफलाइन कोई ऐसा पार्ट टाइम काम शुरू करें जिससे कुछ इनकम बढ़े। इस रकम का इस्तेमाल लोन चुकाने में करें।

पार्ट पेमंट करें
अगर कंपनी की तरफ से सालाना बोनस के रूप में रकम मिलती है या कहीं से कुछ एक्स्ट्रा रकम आती है तो उस रकम से लोन का प्री-पेमंट कर दें। इसे पार्ट पेमंट भी कहते हैं।

नया लोन लेने से बचें
लोन चुकाने के लिए नया लोन लेने से बचें। ध्यान दें कि सभी कर्ज की मासिक ईएमआई की रकम मंथली आमदनी की 35 से 40 फीसदी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

नियम जानें
कोई भी बैंक या रिकवरी एजेंट सुबह 8 बजे से शाम 7 बजे तक ही कॉल कर सकता है या घर/ऑफिस आ सकता है।

इमरजेंसी फंड रखें
किसी भी प्रकार के संकट से बचने के लिए मासिक आमदनी का कम से कम 6 महीने के बराबर इमरजेंसी फंड बनाकर रखें। लोन लेते समय फाइनैंशल प्लानर का ओपिनियन जरूर लें।

परिवार को बताएं

■ अगर किसी शख्स ने लोन के साथ किसी भी प्रकार का इंश्योरेंस लिया है तो इसके बारे में वह परिवार के सदस्यों को बताए। साथ ही इंश्योरेंस के कागज की फोटोकॉपी परिवार के सदस्यों को भी दे ताकि जरूरत में काम आ सकें।

■ अगर कोई शख्स लोन के जाल में फंस गया है तो वह इसके बारे में परिवार के सदस्यों से बात करें। इस जाल से निकलने के लिए उनसे भी सुझाव ले सकते हैं।

Photo :indiapicture

रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) ने हाल में एक सर्कुलर जारी कर बैंकों से कहा है कि वे विलफुल डिफॉल्टर (जानबूझकर लोन नहीं चुकाने वाले लोग) के साथ लोन का सेटलमेंट करें और 12 महीने बाद उस शख्स को अगर जरूरत हो तो फिर से लोन दें। हालांकि RBI के इस फैसले का विरोध भी हुआ जिस पर RBI ने कहा कि सेटलमेंट कोई नई प्रक्रिया नहीं है। बहरहाल, RBI के इस फैसले से उन लोगों को काफी राहत मिलेगी जो सेटलमेंट के बाद फिर से लोन पाने के लिए बैंकों में भटकते थे और उन्हें लोन नहीं मिल पाता था। जरूरी नहीं कि हर कस्टमर (लोन लेने वाला शख्स) विलफुल डिफॉल्टर ही हो। कई बार आर्थिक स्थिति खराब होने पर भी कोई पर्सनल लोन चुकाने में असमर्थ हो जाता है। कई लोग ऐसे होते हैं जो एक लोन को चुकाने के लिए दूसरा लोन और फिर उसे चुकाने के लिए तीसरा लोन ले लेते हैं। आखिरी में एक स्थिति ऐसी आती है कि वे लोन चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं। कह सकते हैं कि वे कर्ज के जाल में फंस जाते हैं। अगर आप भी कर्ज के जाल में फंस गए हैं तो परेशान न हों। ऐसा होने पर आपके लिए सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। आप थोड़ी-सी आर्थिक सूझबूझ से लोन के जाल से हमेशा के लिए बाहर निकल सकते हैं। लोन के जाल से निकलने के कई विकल्प मौजूद हैं।

दो तरह के होते हैं लोन

1. **सिक्योर्ड:** ऐसा कर्ज जिसमें बैंक या फाइनैंशल संस्था लोन के बदले कोई संपत्ति या संपत्ति के कागज गिरवी रखती है। अगर लोन लेने वाला लोन न चुका पाए या लोन लेने वाले की किसी वजह से मृत्यु हो जाए तो बैंक गिरवी रखी गई संपत्ति को बेचकर अपनी रकम पा सकता है। ऐसे लोन की सालाना ब्याज दर 6.5% से लेकर 10% हो सकती है। इस तरह के लोन में होम लोन, कार लोन, गोल्ड लोन आदि आते हैं।

2. **अनसिक्योर्ड:** इसे बैंक या फाइनैंशल संस्था लोन लेने वाले शख्स के क्रेडिट स्कोर, सैलरी या बैंक से संबंध के आधार पर देती है। इसमें बैंक कुछ भी गिरवी नहीं रखता। लोन न चुकाने पर या लोन लेने वाले शख्स की मृत्यु होने पर लोन की रकम बैंक गारंटर से वसूल सकता है। ऐसे लोन की सालाना ब्याज दर 10% से 20% या इससे ज्यादा हो सकती है। पर्सनल लोन, क्रेडिट कार्ड पर लोन आदि अनसिक्योर्ड लोन हैं।

साइन नहीं तो गारंटर नहीं

अगर आपने लोन नहीं लिया है लेकिन किसी बैंक या फाइनैंशल संस्था के एजेंट का आपके पास फोन आए और वह कहे कि आपके किसी दोस्त या जानकार ने लोन लिया है और आप इसमें गारंटर हैं। आपका दोस्त लोन नहीं चुका रहा है और अब लोन आपको ही चुकाना होगा। ऐसे में एजेंट से पूछें कि क्या गारंटी के पेपर पर मेरे साइन हैं? दरअसल, गारंटर वह शख्स माना जाता है जो पेपर पर साइन करता है। लोन लेने वाला शख्स अगर लोन नहीं चुकाता है तो बैंक गारंटर से वसूली कर सकता है। अगर आपने साइन नहीं किए हैं तो आप गारंटर हैं ही नहीं। ऐसे में एजेंट से कहें कि वह फिर से फोन न करें, नहीं तो उसके खिलाफ कोर्ट में हैरेसमेंट का केस दर्ज करवा दिया जाएगा। पेपर पर साइन हों, पर गवाह के तौर पर, तब भी आपकी देनदारी नहीं बनती।

CIBIL SCORE

लोन लेने के लिए सिबिल स्कोर या क्रेडिट स्कोर काफी माने रखता है। यह तीन अंकों की एक संख्या होती है जो 300 से 900 के बीच होती है। यह संख्या जितनी ज्यादा होगी, क्रेडिट स्कोर उतना ही अच्छा माना जाएगा और लोन मिलने के आसार उतने ही बढ़ जाते हैं। वहीं, बैंक से किसी भी तरह के लोन के लेन-देन और क्रेडिट कार्ड की पेमेंट से जुड़े रेकॉर्ड की रिपोर्ट क्रेडिट रिपोर्ट कहलाती है।

... तो बिगड़ जाता है खेल

अगर आप क्रेडिट कार्ड या लोन की कोई ईएमआई समय पर नहीं देते हैं तो आपका क्रेडिट स्कोर कम हो जाता है। यही नहीं, अगर आप डिफॉल्टर की श्रेणी में आ जाते हैं तो हो सकता है कि आपका क्रेडिट स्कोर जीरो भी हो जाए। अगर ऐसा होता है तो हो सकता है कि बैंक आपको ज़िंदगीभर कोई लोन ही न दे। सामान्यतः 500 से कम क्रेडिट स्कोर वाले शख्स को बैंक लोन नहीं देते हैं।

फ्री में यहां चेक करें सिबिल स्कोर

CIBIL की ऑफिशल वेबसाइट cibil.com पर सिबिल स्कोर चेक कर सकते हैं। इसके अलावा Equifax, TransUnion CIBIL, Experian और CRIF Highmark पर भी सिबिल स्कोर चेक कर सकते हैं। साथ ही Paytm, Bajaj Finserv, Bank Bazaar, Paisa Bazaar आदि प्लैटफॉर्म पर भी सिबिल स्कोर चेक कर सकते हैं।

बैंक से बात करें

किसी भी स्थिति के कारण अगर लोन चुकाने की स्थिति में नहीं हैं तो सबसे पहले उस बैंक या **NBFC** कंपनी (जैसे- **Bajaj Finserv, Tata Capital, Kreditbee, Navi Finserv** आदि। ये भी रिज़र्व बैंक के नियमों पर ही काम करती हैं) से बात करें जिससे आपने लोन लिया है। बैंक से बात करके इस तरह कुछ मदद पा सकते हैं:

कुछ समय मांगें

1 लोन की ईएमआई न चुकाने की स्थिति में बैंक को ई-मेल करें या अगर संभव हो तो उस ब्रांच में जाकर लोन डिपार्टमेंट के अधिकारी से मिलें जहां से लोन लिया है। बैंक से बात करके ईएमआई से कुछ समय के लिए राहत ले सकते हैं। बैंक को अपनी स्थिति के बारे में जानकारी दें और यह साफ-साफ बताएं कि कितने समय तक लोन की ईएमआई नहीं दे सकते, मसलनः 3 महीने, 6 महीने या 1 साल या 2 साल। आपकी स्थिति को देखते हुए बैंक फैसला करता है कि वह आपको समय देगा या नहीं। हो सकता है कि आप लोन की ईएमआई चुकाने के लिए 1 साल की छूट मांगे लेकिन बैंक यह समय देने से मना कर सकता है।

लोन को रीस्ट्रक्चर कराएं

2 अगर आपके पास ईएमआई चुकाने जितनी रकम नहीं है तो आप बैंक से बात करके लोन को रीस्ट्रक्चर भी करवा सकते हैं। इसमें लोन की ईएमआई कम हो जाती है लेकिन लोन चुकाने की अवधि बढ़ जाती है। मान लीजिए, किसी शख्स ने 5 लाख रुपये का लोन 5 साल के लिए लिया था। वह शख्स हर महीने करीब 11 हजार रुपये की ईएमआई दे रहा था। वह 3 साल तक लोन की ईएमआई समय पर चुकाता रहा। आर्थिक स्थिति खराब होने पर उसने बैंक से लोन रीस्ट्रक्चर कराने के लिए कहा। बैंक ने बची हुई रकम को आगे 5 साल के लिए और बढ़ा दिया। ऐसे में जहां पहले वह शख्स 11 हजार रुपये की ईएमआई दे रहा था, हो सकता है कि उसे अब 6 से 7 हजार रुपये के बीच ही ईएमआई देनी पड़े।

बैलंस ट्रांसफर कराएं

3 काफी बैंक लोन की रकम को बैलंस ट्रांसफर (BT) की भी सुविधा देते हैं। ऐसे में बैंक लोन के रूप में और ज्यादा रकम देने की पेशकश करते हैं। इससे पुराने लोन खत्म हो जाते हैं और नया लोन शुरू हो जाता है। साथ ही लोन लेने वाले शख्स को और रकम मिल जाती है जिसका इस्तेमाल वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में कर सकता है। कई बैंक ऐसे भी होते हैं जो पुराने वाले बैंक की अपेक्षा कम ब्याज दर पर लोन देने की पेशकश करते हैं। बेहतर होगा कि BT के लिए ऐसे ही बैंक को चुनें। बैंक लोन और क्रेडिट कार्ड के लोन को भी BT करा सकते हैं। हालांकि कई बैंक NBFC कंपनी से लिए गए लोन को BT में शामिल नहीं करते।

मान लीजिए, किसी शख्स ने एक बैंक से 5 लाख रुपये और दूसरे बैंक से 3 या 5 लाख रुपये का लोन लिया था। वह 2 साल तक दोनों लोन की ईएमआई समय पर देता रहा। इसके बाद उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई। उसने किसी तीसरे बैंक से बैलंस ट्रांसफर को लेकर संपर्क किया। बैंक ने उस शख्स की सैलरी या बिजनेस को देखते हुए कुल 10 लाख रुपये लोन का ऑफर दिया। इस दौरान बैंक उस शख्स से चल रहे दोनों लोन की बची हुई रकम की जानकारी मांगेगा। यह जानकारी उस बैंक से मिल जाती है जिससे लोन ले रखा है। दोनों बैंकों के लोन की रकम जितनी बची होगी, तीसरा बैंक उतनी रकम के डीडी लोन लेने वाले शख्स को दे देता है और 10 लाख में से बची शेष रकम लोन लेने वाले शख्स के बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर देता है। अब 10 लाख रुपये के लोन पर नई ईएमआई शुरू हो जाती है।

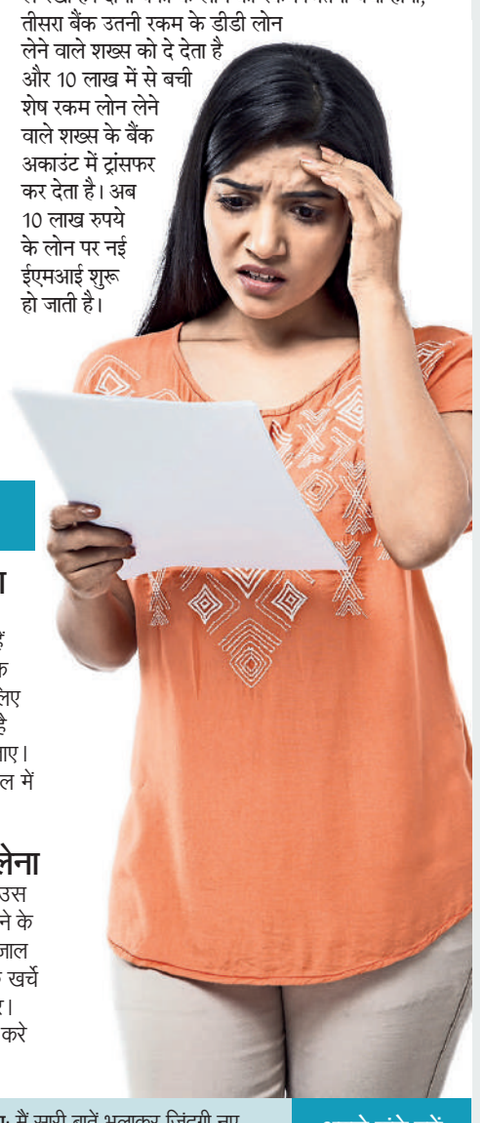

लोन सेटलमेंट कराएं

4 अगर कोई शख्स बैंक के बार-बार कॉल करने पर भी ईएमआई नहीं चुका रहा है तो भी बैंक सेटलमेंट के लिए कह सकता है। इसे वन टाइम सेटलमेंट (OTS) कहा जाता है। इसमें बैंक लोन की बची हुई पूरी रकम नहीं लेते बल्कि 10 से 50 फीसदी ही लेते हैं और बाकी रकम माफ कर देते हैं। ज्यादातर बैंक सेटलमेंट कर रकम चुकाने के लिए 1 हफ्ते का समय देते हैं। OTS के दौरान ये बातें ध्यान रखें:

■ लोन सेटलमेंट के लिए बैंक को ठोस कारण बताने होते हैं। जैसे- जॉब का चले जाना और 6 महीने से ज्यादा समय बीतने पर भी जॉब न मिलना, बिज़नेस का डूब जाना, कमाई लोन की ईएमआई और दूसरे जरूरी खर्चों से लगना आदि।

■ लोन सेटलमेंट के दौरान बैंक जो रकम तय करता है, लोन लेने वाला उसे कम करने के लिए कह सकता है। मान लीजिए, रमेश के पास लोन की बकाया रकम 3 लाख रुपये है। इसमें ब्याज या जुर्माना शामिल नहीं है। सेटलमेंट के दौरान बैंक रमेश से 1 लाख रुपये देकर लोन को बंद करने के लिए कहता है। अगर रमेश इस प्रस्ताव पर सहमत है तो वह बैंक को 1 लाख रुपये देकर अपना लोन बंद करवा सकता है। रमेश के पास 1 लाख रुपये नहीं हैं तो वह सेटलमेंट की इस रकम को और कम करने के लिए भी कह सकता है। हो सकता है कि बैंक 1 लाख रुपये से कम रकम में लोन का सेटलमेंट कर दे।

■ सेटलमेंट के दौरान बैंक से कहें कि बैंक उसे एक अग्रीमेंट या NOC (नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट) दे जिसमें लिखा हो कि सेटलमेंट के बाद लोन बंद कर दिया जाएगा और अगर कोई कानूनी कार्रवाई चल रही है तो उसे खत्म कर दिया जाएगा। साथ ही इस लोन से संबंधित भविष्य में भी कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की जाएगी।

कुछ नुकसान भी हैं लोन सेटलमेंट के

■ लोन सेटलमेंट के बाद क्रेडिट स्कोर कम हो जाता है। एक लोन के सेटलमेंट से 50 से 100 पॉइंट कम हो जाते हैं।

■ सिबिल रिपोर्ट में भी इस बात का जिक्र रहता है कि उस लोन को सेटल किया गया है। रिज़र्व बैंक के नए सर्कुलर के मुताबिक बैंक ऐसे शख्स को 12 महीने तक शायद ही कोई नया लोन दें। 12 महीने के बाद बैंक नया लोन देने से मना नहीं कर सकते।

■ भविष्य में जब भी आपकी आर्थिक स्थिति सही हो जाए तो बैंक से बात करें और लोन की बकाया रकम को चुकाकर सेटल्ड अकाउंट को क्लोस्ड अकाउंट में बदलने की कोशिश करें।

ऐसे पहचानें कि आप कर्ज के जाल में फंस रहे हैं...

1 आमदनी अठन्नी, खर्चा रुपया

अगर आपके खर्चे आपकी आमदनी से ज्यादा हैं तो जाहिर है कि उनकी पूर्ति के लिए आप लोन लेंगे। जरूरी नहीं कि यह लोन बैंक से सीधे तौर पर ही लिया जाए। अगर आपके पास क्रेडिट कार्ड है तो इससे किया गया खर्च भी आपको कर्ज के जाल में फांस सकता है। क्रेडिट कार्ड से शुरू में यह सोचकर खर्च कर दिया जाता है कि बाद में चुका देंगे। लेकिन कई बार बाद होते-होते इतनी देर हो जाती है कि क्रेडिट कार्ड का बिल चुकाने के पैसे नहीं बचते। ऐसे में लोन लेना पड़ सकता है। इसलिए अपनी कमाई और खर्च में बैलंस बनाकर चलें।

2 आधी से ज्यादा आमदनी EMI में जाना

अगर आपके पास एक या एक से ज्यादा लोन (पर्सनल लोन, होम लोन, वीइकल लोन, क्रेडिट कार्ड लोन आदि) हैं और इनकी EMI आपकी मंथली आमदनी से 50 फीसदी ज्यादा है तो यह संकेत है कि आप धीरे-धीरे कर्ज के जाल में फंस रहे हैं या फंसने वाले हैं। ध्यान रखें, EMI की रकम मासिक आमदनी से 30 फीसदी ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

3 EMI या बिल टाइम पर जमा न होना

मौजूदा लोन की EMI या क्रेडिट कार्ड या किसी दूसरी जरूरी चीज का बिल अगर टाइम पर नहीं भर पा रहे हैं तो इससे पता चलता है कि आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। EMI और बिल का पेमंट समय पर करने के लिए आपको पैसों की जरूरत पड़ेगी। चूंकि आमदनी इतनी है नहीं तो दिमाग में आएगा कि एक और लोन ले लिया जाए। ऐसा हो तो समझ लें कि आप 100 फीसदी कर्ज के जाल में फंसने जा रहे हैं।

4 लोन की रकम चुकाने के लिए लोन लेना

अगर आपके पास लोन चुकाने के लिए रकम नहीं है और उस लोन की EMI भरने के लिए दूसरा, दूसरे लोन की EMI देने के लिए तीसरा लोन ले रहे हैं तो समझ लें कि आप कर्ज के जाल में फंसते जा रहे हैं। ऐसा बिलकुल न करें। बेहतर होगा कि खर्चे कम करके लोन की रकम चुकाएं, न कि दूसरा लोन लेकर। अगर शादीशुदा हैं तो पार्टनर से कहें कि वह भी कोई जॉब करे ताकि लोन की रकम को जल्द से जल्द चुकाया जा सके।

राहुलः सनी, तूने मुझसे 15 हजार रुपये उधार लिए थे और कहा था कि 15 दिन में लौटा दूंगा।
सनीः हां, तो क्या?
राहुलः तो क्या? आज 20 दिन हो गए। मुझे लोटा दे।

सनीः यह ले...

राहुलः यह क्या है?
सनीः तूने कहा कि लोटा दे। मैंने लोटा दे दिया।

सुरेशः मैं सारी बातें भुलाकर जिंदगी नए सिरे से शुरू करना चाहता हूं।
उमेशः अच्छा है! तो दिक्कत क्या है?
सुरेशः जिनसे उधार लिया है वे मानते ही नहीं हैं।

अगले संडे पढ़ें लोन चुकाने से संबंधित कानूनी पहलू।

कर्ज चुकाने के लिए ये तरीके आजमाएं

1 पुरानी चीजें बेच दें

घर या दुकान में नई या पुरानी ऐसी काफी चीजें होती हैं जो काफी लंबे समय से इस्तेमाल में नहीं आती। ऐसी चीजों की लिस्ट बनाएं और उन्हें बेच दें। ध्यान रखें, एक्सपर्ट कहते हैं कि अगर घर में कोई ऐसी चीज रखी है जो एक साल से इस्तेमाल में नहीं आई तो वह शायद ही आगे काम आए। ऐसी चीजें सस्ती भी हो सकती हैं और महंगी भी। इन्हें बेचने के लिए OLX, Quikr जैसे प्लैटफॉर्म की मदद ले सकते हैं।

2 सेविंग्स/इन्वेस्टमेंट की मदद लें

बेहतर भविष्य के लिए हम प्रॉपर्टी खरीदते हैं और सेविंग्स या इन्वेस्टमेंट (फिक्स्ड डिपॉजिट्स, म्यूचुअल फंड्स, लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी, शेयर मार्केट आदि) करते हैं। चूंकि जब बात पास में रकम न होने के कारण लोन को चुकाने में देरी की हो तो बेहतर होगा कि उस प्रॉपर्टी को गिरवी रखकर या बेचकर लोन की रकम चुका सकते हैं। अगर प्रॉपर्टी नहीं है और कहीं इन्वेस्टमेंट किया हुआ है तो उस रकम को निकालकर लोन की रकम चुका दें। शेयर हैं तो उन्हें भी बेचकर लोन चुका सकते हैं। गोल्ड है तो गोल्ड लोन भी ले सकते हैं। सोचिए, प्रॉपर्टी और इन्वेस्टमेंट तो बाद में भी हो जाएंगे लेकिन लोन और भारी ब्याज के सिर दर्द से तो छुटकारा मिलेगा।

3 दोस्त या करीबी से उधार लें

वैसे तो आज के समय में ऐसे दोस्त या करीबी बहुत कम होते हैं जो संकट में काम आते हैं लेकिन होते जरूर हैं। अपने घर या ऑफिस के आसपास देखें। शायद कोई ऐसा मिल जाए जो आपकी मदद करने के लिए तैयार हो जाए। लेकिन इसके लिए आपको उसे अपनी स्थिति के बारे में खुलकर बताना होगा। दोस्त की मदद लेने के दौरान उसे बताएं कि आप उन्हें आप रकम रिटर्न कब और कैसे करेंगे? इसकी गारंटी दें। चाहें तो आगे की तारीख का चेक भी दे सकते हैं।

4 सैलरी बढ़े तो ज्यादा रकम चुकाएं

अगर आपकी सैलरी में 8 फीसदी से लेकर 10 फीसदी तक की वृद्धि हुई है तो लोन की ईएमआई की रकम 5 फीसदी बढ़वा दें। इससे कुछ ज्यादा ईएमआई जाएगी लेकिन जो लोन चुकाने में पहले 5 साल लगते, हो सकता है कि अब वह लोन 3 साल में ही खत्म हो जाए। इससे आप लोन से जल्दी से जल्दी बाहर आ जाएंगे। वहीं अगर एक से ज्यादा लोन हैं तो ईएमआई अपने हिसाब से बढ़वा सकते हैं।

5 ज्यादा ब्याज के लोन पहले चुकाएं

अगर किसी शख्स के पास एक से ज्यादा लोन (पर्सनल लोन, क्रेडिट कार्ड का लोन आदि) हैं तो सबसे पहले सभी लोन की एक लिस्ट बनाएं। इसमें कर्ज की रकम, बाकी रकम रकम, ब्याज दर, लोन की ईएमआई, बचा समय आदि शामिल करें। इसके बाद तय करें कि आपको सबसे पहले कौन-सा लोन चुकाना है। काफी एक्सपर्ट कहते हैं कि उस लोन को सबसे पहले चुकाएं जिसका ब्याज सबसे ज्यादा है। कुछ एक्सपर्ट पर सहमत नहीं हैं। इन एक्सपर्ट का कहना है कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि लोन की रकम और EMI की रकम कितनी है।

जरूरत हो तभी लें लोन

काफी लोग होते हैं जो अपने शौक पूरा करने के लिए लोन ले लेते हैं। अगर आपके अंदर ऐसी आदत है तो इसे तुरंत छोड़ दें नहीं तो लोन के जाल में फंसते हुए देरी नहीं लगेगी। जानें, लोन लेना कितना जरूरी है और कब लें:

दिखावे पर न जाएं : अगर किसी चीज की बेहद जरूरत है, तभी उसके लिए लोन लें। जैसे- घर खरीदना, एजुकेशन के लिए, बिज़नेस को बढ़ाने के लिए आदि। लोन कभी अपनी इच्छा पूरी करने या दिखावा करने के लिए न लें। जैसे- महंगा फोन खरीदने के लिए, घर की गैरजरूरी चीजें खरीदने के लिए आदि।

आमदनी से 35 से 40 फीसदी तक हो ईएमआई : एक या एक से ज्यादा लोन हैं तो ध्यान रखें कि सभी लोन की ईएमआई आमदनी से 35 से 40 फीसदी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। वहीं अगर बिज़नेस लोन ले रहे हैं तो ध्यान रखें कि उस बिज़नेस की कमाई से ही लोन की ईएमआई जाए।

इंश्योरेंस जरूर लें : अगर पर्सनल लोन ले रहे हैं तो लोन की रकम की दोगुनी रकम के बराबर टर्म इंश्योरेंस जरूर लें। साथ में ऐक्सिडेंट इंश्योरेंस भी जरूर करवा लें। ये इंश्योरेंस इसलिए ताकि लोन लेने वाले शख्स की मृत्यु होने पर इंश्योरेंस की रकम से लोन की रकम चुकाई जा सके ताकि परिवार के सदस्यों को परेशानी न हो। बैंक लोन लेने वाले शख्स का ऐक्सिडेंटल इंश्योरेंस कर लेते हैं ताकि उसकी मृत्यु होने पर लोन की रकम इंश्योरेंस कंपनी से ली जा सके। इंश्योरेंस का प्रीमियम लोन लेने वाले शख्स से ही लिया जाता है। अगर कोई शख्स 5 साल के लिए 5 लाख का लोन ले रहा है तो बैंक लोन लेने वाले शख्स का 5 साल का ऐक्सिडेंटल इंश्योरेंस कर लेते हैं। इसका प्रीमियम 3 हजार से 8 हजार रुपये तक हो सकता है।

लोन के जाल में फंसने से बचने के टिप्स

दूसरे विकल्प सोचें

पर्सनल या क्रेडिट कार्ड पर लोन लेने से पहले सोचें कि इस तरह के लोन के अलावा क्या कहीं और से रकम उधार ली जा सकती है? क्या कोई ऐसी प्रॉपर्टी है जिसे बेचकर अभी की जरूरत पूरी की जा सकती है? किसी भी बैंकिंग संस्था से लोन के लिए तभी अप्लाई करें जब कोई दूसरा विकल्प न हो। साथ ही यह भी देखें कि लोन की किस्त चुकाने में घर के बजट पर कोई असर तो नहीं पड़ेगा।

बाय नाउ, पे लेटर से बचें

काफी कंपनियां 'बाय नाउ, पे लेटर' का ऑप्शन देती हैं। इसका मतलब है कि चीजें अभी खरीद तो और बिल बाद में किस्तों में चुकाते रहिए। इसके लिए किसी भी प्रकार के लोन या क्रेडिट कार्ड की जरूरत नहीं पड़ती। कई बार ऐसी रकम प्री-अप्रूव्ड होती है। ज्यादातर लोग 'बाय नाउ, पे लेटर' की सुविधा इस्तेमाल कर लेते हैं, यह जाने बिना कि वे बाद में उस रकम को सही तरीके से चुका पाएंगे या नहीं। जब उसकी ईएमआई नहीं दी जाती तो वे उनके पास लोन लेने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचता।